भारतीय लोक कला में प्रतीकों का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व

कौशल कुमार
शोधार्थी (चित्रकला विभाग)
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय
अल्मोड़ा, (उत्तराखण्ड)
ईमेलः *space72bound@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:

कौशल

भारतीय लोक कला में प्रतीकों का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व
Artistic Narration
July-Dec. 2024,
Vol. XV, No. 2
Article No. 34
pp. 206-212

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-dec-2024-vol-xv-no2

सारांश

भारतीय लोक कला सांस्कृतिक, परंपरा और प्रतीकों का एक समृद्ध दृश्य माध्यम है, जो समाज की आस्थाओं, रीति–रिवाज और ऐतिहासिक मान्यताओं को दर्शाता है। सत्य, शिव और सुंदर की अवधारणा पर आधारित यह कला, प्रतीकों के माध्यम से धार्मिक, सामाजिक और प्राकृतिक तत्वों को दर्शाती है। ओम, स्वास्तिक, कलश, सूर्य, चंद्रमा, शंख, पद्म, वृक्ष, पशु–पक्षी आदि प्रतीक भारतीय लोक कला में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये प्रतीक न केवल सौंदर्यबोध को विकसित करते हैं, बल्कि गहरे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अर्थ भी व्यक्त करते हैं। विभिन्न चित्रकला शैलियाँ– मधुबनी, वारली, फड़, गोंड, पिथौरा आदि– इन प्रतीकों का विविध रूपों में प्रयोग करती हैं। ज्यामितीय आकृतियाँ और रंग भी प्रतीकात्मक रूप से लोक कला में प्रयुक्त होते हैं, जो जीवन, संतुलन और ऊर्जा को दर्शाते हैं। इस शोध पत्र में भारतीय लोक कला में प्रतीकों के महत्व और उनकी सांस्कृतिक प्रासंगिकता को विश्लेषणात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य बिंदु

भारतीय लोक कला, प्रतीकवाद, संस्कृति, परंपरा, प्रतीक, सामाजिक मान्यताएँ, प्राकृतिक तत्व।

प्रस्तावना

संसार में वही संस्कृति समृद्ध और शाश्वत है जो सत्यं शिवं और सुन्दर की अवधारणा पर आधारित है। सत्य, शिव और सुंदर का समन्वय ही कला को संपूर्ण और कालजयी बनाता है। जब कला सत्य को प्रकट करती है, शुभता को प्रेरित करती है, और सौंदर्य का रस प्रदान करती है, तब वह समाज और व्यक्ति को एक उच्चतर स्तर पर ले जाती है। भारतीय कला परंपरा में यह कला और जीवन के बीच गहरे संबंध को उजागर करती है। संस्कृति का यह गतिशील रथ जिन पहियों पर चलता है, उनमें प्रमुख है–लोक परम्परा। परम्पराओं में जीवन शैली, खान–पान, वेशभूषा, उत्सव–त्यौहार, व्यवसाय और धार्मिक कर्म आदि सम्मिलित होते है। इसलिए लोक परम्पराएँ ही लोक कला का आधार है, लोक कला एक विशेष क्षेत्र की सांस्कृतिक, पारंपरिक और सामाजिक मान्यताओं से प्रेरित कला होती है, जो आम जनता द्वारा विकसित और संरक्षित की जाती है। यह किसी क्षेत्र की जीवनशैली, आस्थाओं, त्योहारों, लोककथाओं और ऐतिहासिक परंपराओं को कलात्मक रूप से प्रस्तुत करती है क्योंकि ये ही मनुष्य के मन और बुद्धि में संस्कारों का रोपण करती है और इन सभी संस्कारों का मनुष्य अपने दैनिक जीवन में चित्रण करने लगता है। परम्पराओं का यह चित्रण ही लोक कला कहलाता है। ''लोक कला की धारा समाज के साथ–साथ अपनी दिशा तो बदलती रहती है किन्तु उसका प्रवाह अनवरत होता है। वह समाज की अनुकूलता की मर्यादा में ढली चली जाती है लोक कला चित्रण में स्थानीय सामग्री का ही प्रयोग होता है।''[1] ''प्रतीकात्मकता, कला और साहित्य का सौन्दर्य है। लोक कला में प्रतीकों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि ये किसी भी समाज की सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक मान्यताओं को व्यक्त करने का प्रभावशाली माध्यम होते हैं। प्रतीक केवल सौंदर्य के लिए नहीं होते, बल्कि वे गहरे अर्थों और भावनाओं को दर्शाते हैं। अतः भारतीय लोक कला में भी अनेक प्रतीकों का सहारा लिया गया है। इन प्रतीकों के समावेश ने लोक कला को सहज, सुबोध और सुन्दर बना दिया है। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि प्रतीक अर्थात् न्यूनतम रूपाकारों में अधिकतम अभिव्यक्ति। इसलिए लोक कला के आकार सरल एवं वेगवान होते हैं।''[2] लोक कला में प्रतीक केवल चित्रों और डिजाइनों तक सीमित नहीं होते, बल्कि वे समाज की धारणाओं, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक पहचान का जीवंत दस्तावेज होते हैं। ये प्रतीक हमें लोक जीवन की गहराई को समझने में मदद करते हैं और सांस्कृतिक धरोहर को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का काम करते हैं। भारतीय संस्कृति बहुरंगी है क्योंकि इसमें भिन्न–भिन्न संस्कृतियों का मेल है। भारतवर्ष में बहुत से राज्य है, सभी की अपनी परम्पराएँ है अतः यहाँ की लोक कला भी विविधवर्णी और बहुप्रतीकात्मक है। भारतीय लोक कलाओं में प्रतीकों का बहुत महत्व है ये प्रतीक यहाँ के लोक जीवन की परम्पराओं को प्रदर्शित करने में अहम भूमिका निर्वहण करते आ रहे हैं।

''लोक कलाओं की आकृतियों जहाँ एक और अपने साधारण अंकन व प्राकृतिक रंगों से पूर्णता पाती है वहीं दूसरी और इसमें विभिन्न प्रतीकों को भी मुख्य रूप से सम्मिलित किया जाता है। ये प्रतीक धार्मिक भावनाओं एवं परम्पराओं आदि पर ही सृजित नहीं होते बल्कि इनके वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी होते हैं (इन प्रतीकों को हम मांगलिक कार्यों तथा लोक कला में सृजित कर अपने आप को इनसे जोड़े रखते हैं)। परम्परा की इस विरासत में प्रतीकों का सुन्दर प्रयोजन मूलक तथा सुरुचिपूर्ण समावेश है। ये प्रतीक अधिकांशतः आलेखनों में मिलते हैं।''[3] कुछ मुख्य प्रतीकों के भाव बोध व अर्थों की चर्चा प्रासंगिक रूप में भारतीय लोक कला में प्रतीकों का विशेष महत्व है, क्योंकि ये किसी भी समाज की सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और पारंपरिक धारणाओं को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम होते हैं। प्रतीक केवल सजावट के लिए नहीं होते,

बल्कि वे लोक जीवन की गहरी भावनाओं, आस्थाओं और परंपराओं को दर्शाते हैं। ''भारतीय लोक कला में धार्मिक प्रतीकों का व्यापक उपयोग किया जाता है, जो देवताओं, आस्था और शुभता को दर्शाते हैं। जैसे– ओम, स्वस्तिक और कलश–शुभता और पवित्रता के प्रतीक जो मधुबनी, वरली, फड़ चित्रकला में दर्शाया जाता है।''[4]

कलश शुभ कार्यों हेतु विभिन्न अनुष्ठानों पर सुख समृद्धि, सम्मान, सम्पन्नतर तथा परिपूर्णता के प्रतीक के रूप में लोक कला में स्थान पाता है। जैसा कि (चित्र संख्या–1) में दर्शाया गया है।

चित्र संख्या–1

भारतीय लोक कला में स्वस्तिक (चित्र संख्या–2) एक अत्यंत महत्वपूर्ण और शुभ प्रतीक है, जिसका उपयोग प्राचीन काल से धार्मिक, सांस्कृतिक और कलात्मक अभिव्यक्तियों में किया जाता रहा है। यह प्रतीक समृद्धि, सौभाग्य, शुद्धता और ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है। इसे अनंत ऊर्जा और संतुलन के प्रतीक के रूप में दिखाया जाता है।

चित्र संख्या–2

सूर्य और चंद्रमा, दिव्यता, शक्ति और निरंतरता के प्रतीक (गोंड चित्रकला में) सूर्य (चित्र संख्या–3) वे चन्द्र को लोक कला में देवी व शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। सूर्य तेजस्विता, जीवन्तता, गतिशीलता तथा आरोग्यता के साथ–साथ जगपालक (अन्न व जलदाता) का प्रतीक है। वहीं चन्द्रमा की सम्पूर्ण आकृति को पूर्णता के प्रतीक के रूप में लोक कला में स्वीकार किया गया है। शंख और पद्म (कमल)– समृद्धि और आध्यात्मिक ज्ञान के प्रतीक। ''अल्पना अंकन का प्रमुख अभिप्राय कमल होता है खिले हुए कमल पुष्प की अल्पना में आवश्यकता अनुसार पंखुड़ियां की संख्या रखी जाती है इसे अधिकांशत देवी देवताओं की मूर्तियों के आसन के रूप में तथा मंगल घाट का प्रतीक स्थापित करने के स्थान पर बनाया जाता है''[5] प्रकृति से जुड़े प्रतीक भारतीय लोक कला में पेड़–पौधे, पशु–पक्षी और प्राकृतिक तत्वों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

चित्र संख्या–3

ये प्रतीक प्रकृति के प्रति सम्मान और सह–अस्तित्व को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए पेड़ जैसे पीपल बरगद और तुलसी को दीर्घायु पवित्रता और आध्यात्मिकता का प्रतीक माना जाता है। मधुबनी और वारली चित्रकला में इन्हें प्रमुखता से चित्रित किया जाता है। पीपल जीवन और ज्ञान का, तुलसी पवित्रता और देवी लक्ष्मी से जुड़ी, जबकि बरगद स्थायित्व का प्रतीक होता है। इसी तरह, मछली समृद्धिए उर्वरता और शुभता का प्रतीक है, जो विशेष रूप से मधुबनी चित्रकला में दिखाई देती है। यह हिंदू धर्म में भगवान विष्णु के मत्स्य अवतार से भी जुड़ी हुई है और जल व जीवन के गहरे संबंध को दर्शाती है।

राजस्थानी फड़ और पिथौरा चित्रकला में हाथी को शक्ति, बुद्धिमत्ता और शाही वैभव का प्रतीक माना जाता है। यह समृद्धि और राजसी ठाठ का प्रतीक होता है और गणेश जी से जुड़े होने के कारण सौभाग्य का द्योतक भी है। इसी प्रकार, मोर प्रेम, सुंदरता और ईश्वरीय आशीर्वाद का प्रतीक होता है, जो गोंड और फड़ चित्रकला में देखने को मिलता है। इसे भगवान कृष्ण से जोड़ा जाता है और यह कला में सौंदर्य व प्रेम की अभिव्यक्ति के रूप में उभरता हे। वहीं, सर्प नाग पुनर्जन्म, रहस्य और शक्ति का प्रतीक होता है, जिसे पिथौरा और वारली चित्रकला में दर्शाया जाता है। नाग को भगवान शिव के गले में सुशोभित दिखाया जाता है, जो शक्ति और निडरता का प्रतीक है। भारतीय लोक कथाओं में नाग देवता की पूजा उर्वरता और सुरक्षा के रूप में की जाती है। संक्षेप में, भारतीय लोक कला में प्रतीकों का उपयोग केवल सजावट के लिए नहीं, बल्कि गहरे सांस्कृतिक और धार्मिक भावों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है।

ये प्रतीक भारतीय समाज के विश्वासों, भारतीय लोक कला में सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतीकों का विशेष महत्व होता है जो समाज की मान्यताओं, रीति–रिवाजों और पारंपरिक व्यवस्थाओं को चित्रित करते हैं। लोक कला में विवाह, वीरता, जीवन संतुलन और सांस्कृतिक मूल्यों को विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया जाता है। उदाहरण के लिए शादी के चित्रों में मंडप, घोड़ी और हाथी को विवाह के शुभ अवसर का प्रतीक माना जाता है। ये तत्व भारतीय विवाह परंपरा में समृद्धिए आनंद और नए जीवन की शुरुआत को दर्शाते हैं। इसी तरह, वारली चित्रकला में वृत्त और त्रिकोण स्थिरता और ऊर्जा का प्रतीक होता है। वहीं, राजस्थानी फड़ चित्रकला में राजा और योद्धा वीरता और गौरव के प्रतीक के रूप में चित्रित किए जाते हैं, जो राजस्थान की समृद्ध वीर गाथाओं और ऐतिहासिक परंपराओं को उजागर करते हैं।

भारतीय लोक कला में सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से परंपराओं और सामूहिक मूल्यों को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जिससे यह कला समाज की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा बनती है। भारीतय लोक कला में विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों और रंगों का विशेष प्रतीकात्मक महत्व होता है। ज्यामितीय आकृतियाँ न केवल सौंदर्य बढ़ाने के लिए प्रयुक्त होती हैं, बल्कि वे गहरे अर्थ और भावनाओं को भी प्रकट करती हैं। उदाहरण के लिए वृत्त अनंतता और चक्र का प्रतीक होता है, जिसे विशेष रूप से वारली चित्रकला में देखा जाता है। यह जीवन के सतत प्रवाह और पुनर्जन्म की अवध ाारणा को दर्शाता है। इसी तरह त्रिभुज शक्ति और ऊर्जा का प्रतीक है (चित्र संख्या–4) जो स्थिरता और संतुलन का भी दर्शाता है, आड़ी–तिरछी रेखाएँ गति और जीवन प्रवाह को प्रदर्शित करती हैं, जिससे चित्रकला में एक जीवंतता और लय का अनुभव होता है।

चित्र संख्या–4

रंगों का भी लोक कला में गहरा प्रतीकात्मक महत्व होता है। लाल रंग शक्ति, प्रेम और ऊर्जा का प्रतीक होता है, जो विशेष रूप से गोंडए मधुबनी और फड़ चित्रकला में देखने को मिलता है। पीला रंग ज्ञान, प्रकाश और समृद्धि का प्रतीक है, जिसे आध्यात्मिकता और सकारात्मकता से जोड़ा जाता है। हरा रंग प्रकृति, उर्वरता और नए जीवन का प्रतीक माना जाता है, जो पर्यावरण और कृषि से जुड़े महत्व को दर्शाता है। नीला

रंग आकाश, ईश्वर और अनंतता का प्रतीक होता है, जो शांति और दिव्यता को प्रकट करता है। इसके अलावा, काला और सफेद रंग अच्छे और बुरे के द्वंद्व को दर्शाते हैं, जो जीवन के संतुलन और विरोधाभास को प्रस्तुत करते हैं।

भारतीय लोक कला में आकृतियों और रंगों के माध्यम से गहरे अर्थों को व्यक्त किया जाता है, जिससे यह कला शैली और अधिक जीवंत और प्रभावशाली बनती है। भारतीय समकालीन कला जगत में कई प्रमुख चित्रकार हैं जो लोककला प्रतीकों का उपयोग अपने कार्यों में कर रहे हैं। इनमें से कुछ प्रमुख कलाकार हैं ''लाडो बाई'' मध्य प्रदेश के भील जनजाति से ताल्लुक रखने वाली लाडो बाई की कला में भील समुदाय की आध्यात्मिकता और प्रकृति के तत्वों का समावेश हैं (चित्र संख्या–5)। उनके कार्यों में पारंपरिक भील प्रतीकों और कथाओं का समृद्ध चित्रण मिलता है। ''वेंकट रमन सिंह श्याम'' गोंड कला के प्रमुख कलाकारों में से एक, वेंकट रमन सिंह श्याम अपने चित्रों में पारंपरिक गोंड प्रतीकों और आधुनिक विषयों का संयोजन करते हैं (चित्र संख्या–6)। उनकी कला में गोंड मिथकों, लोककथाओं और समकालीन मुद्दों का मिश्रण देखने को मिलता है।

चित्र संख्या–5

चित्र संख्या–6

निष्कर्ष

भारतीय लोक कला केवल सौंदर्यपरक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक धारणाओं को भी प्रतिबिंबित करती है। प्रतीक, जो लोक कला का अभिन्न अंग हैं, न केवल पारंपरिक मान्यताओं को संरक्षित रखते हैं, बल्कि सामूहिक स्मृतियों और जीवन मूल्यों को भी व्यक्त करते हैं। ओम, स्वास्तिक, कलश, सूर्य, चंद्रमा, वृक्ष, पशुपक्षी, ज्यामितीय आकृतियाँ आदि प्रतीक भारतीय समाज की आध्यात्मिकता, प्रकृति प्रेम और जीवन के प्रति संतुलित दृष्टिकोण को उजागर करते हैं। विभिन्न चित्रकला शैलियों में इन प्रतीकों का समावेश, कला को विशिष्ट पहचान प्रदान करता है और इसे कालजयी बनाता है। लोक कला की निरंतर प्रवाहमान प्रकृति इसे बदलते समाज के अनुरूप ढालने में सक्षम बनाती है, जिससे यह सांस्कृतिक धरोहर पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित और समृद्ध होती रहती है। इस प्रकार, लोक कला और प्रतीकवाद केवल अतीत का हिस्सा नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के सांस्कृतिक प्रवाह को दिशा देने वाले महत्वपूर्ण तत्व हैं।

संदर्भ

1. अग्रवाल डॉ० गिराज किशोर, 1989, अशोक कला निबंध, ललित कला प्रकाशन 27–ए साकेत कॉलोनी अलीगढ़, उत्तर प्रदेश।
2. डॉ० सुखदेव श्रोत्रीय, 1997, कला विकास, प्रकाशन– चित्रायण (पृ. सं. 119)।
3. कल त्रैमासिक, लोक कला विशेषांक, जनवरी मार्च 2012, राज्य ललित कला अकादमी उत्तर प्रदेश, (पृ. सं. 17)।
4. कल त्रैमासिक, लोक कला विशेषांक, जनवरी मार्च 2012, राज्य ललित कला अकादमी उत्तर प्रदेश, (पृ. सं. 17)।
5. डॉ० गुप्ता नीलिमा, 2023, चित्रकला एवं लोक कला के सिद्धांत एवं तकनीक कला के मूल तत्व, प्रगति प्रकाशन, (पृ. सं. 152)।